

विषय सूची

पुरोवाक्

iii-iv

भूमिका

v-viii

प्रथम अध्याय

शिवस्तोत्रावली : कृति एवं कृतिकार 1-11

- | | | |
|-----|----------------------------|------|
| i | ग्रन्थ - परिचय | 1-3 |
| ii | ग्रन्थकार - परिचय | 3-5 |
| iii | कृति का दार्शनिक मूल्यांकन | 5-11 |

द्वितीय अध्याय

भक्ति : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य 12-38

- | | | |
|------|----------------------------------|-------|
| i | वेदों में भक्ति | 12-14 |
| ii | उपनिषदों में भक्ति | 14-17 |
| iii | ऐतिहासिक महाकाव्यों में भक्ति | 17-24 |
| iv | पुराणों में भक्ति | 24-30 |
| v | लौकिक संस्कृत साहित्य में भक्ति | 30-33 |
| vi | भारतीय साहित्य शास्त्र में भक्ति | 33-35 |
| vii | कश्मीर में भक्ति-परम्परा | 35-36 |
| viii | कश्मीर शैव दर्शन में भक्ति | 36-28 |

तृतीय अध्याय

भक्ति के विभिन्न सम्प्रदाय 39-63

- | | | |
|-----|---------------|-------|
| i | वैष्णव भक्ति | 39-44 |
| ii | शैव भक्ति | 44-51 |
| iii | स्मार्त भक्ति | 51-52 |
| iv | नवधा भक्ति | 53-57 |

v	पुष्टिमागीय भक्ति	57-60
vi	रहस्यवादी भक्ति	60-63
चतुर्थ अध्याय		
	शिवस्तोत्रावली में भक्ति का स्वरूप	64-95
i	उपासक	64-73
ii	उपास्य	73-79
iii	उपासना	80-90
iv	भक्ति का वैशिष्ट्य	90-95
उपसंहार		96-99
ग्रन्थ-सूची		100-108
परिशिष्ट 1. शिवस्तोत्रावली की स्तोत्र-सूची एवं मूलपाठ		111-156
परिशिष्ट 2. श्लोकानुक्रमणिका		157-165